ISSN: 2349 – 4891

ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

शिक्षा को सशक्त करने की प्रक्रिया में जनसंचार साधन की भूमिका

शोध निर्देशक, **डॉ** रिशिकेश यादव

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

शोधार्थी, मेघा साहू

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

Abstract

जनसंचार साधनों के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है तथा नवीन ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाता है। जब सम्प्रेषण व्यक्तियों में आमने–सामने होता है तो हम इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं तथा सम्प्रेषणकर्ता को तुरन्त पृष्ठपोषण मिल जाता है। दृश्य–श्रव्य शिक्षण साधन व्यक्ति के सम्प्रेषण का आधार हैं। जब सम्प्रेषण किसी जनसंचार माध्यम और व्यक्ति के बीच होता है पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था अधिगम का एक अच्छा तरीका है, हाला ंकि, वैश्वीकरण न` ज्ञान प्ऱाप्त करने, सीखने और कम करने के तरीके का` बदल दिया है। जनसंचार मीडिया आ`र डिजीटल मीडिया का हमारे दैनिक जीवन पर प्ऱत्यक्ष और महत्वपूण ´ प्ऱभाव पड़ता ह`। यह अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा ह` और इसका उपयोग शिक्षा का` प्रोत्साहन द`ने के लिए किया जा सकता है। व` अधिगम की नई प्रक्रियाओं आ`र तकनीकों के माध्यम से नई तर ंगे उत्पन्न कर रहे हैं।

Keywords: प्रौद्योगिकी *जनसंचार मीडिया शिक्षा विकास सूचना और संचार*

1.1 परिचय

आजकल शिक्षा क्षेत्र में, विशेष रूप से शैक्षणिक गतिविधियों में प्रौद्योगिकी को सशक्त करने की प्रक्रिया में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभावों का पूर्वानुमान लगाने और दूर करने के लिए शिक्षा क्षेत्र सबसे प्रभावशाली क्षेत्र हो सकता है।सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना के पारेषण, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान–प्रदान में काम आते हैं।

1.2 जनसंचार

जनसंचार माध्यमों के वर्तमान प्रचलित रूपों में प्रमुख हैं– समाचारपत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट। इन माध्यमों के जरिये जो भी सामग्री आज जनता तक पहुँच रही है, राष्ट्र के मानस का निर्माण करने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लोकसम्पर्क या जनसम्पर्क या जनसंचार (Mass communication) से तात्पर्य उन सभी साधनों के अध्ययन एवं विश्लेषण से है जो एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ संचार सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होते हैं। आध ुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं स ूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पया ´वरणीय तथा मना `सामाजिक समस्याओं स` घिरा हुआ है। ऐस` में शिक्षक, शिक्षा आ`र प्रशिक्ष ु जगत भी अछूता नही ं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति स` समृद्ध थी जिसमें धर्म का` आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सा ंस्कृतिक च `तना एवं धार्मिक सहिष्ण ुता से स ंचालित हा `ता था। इसके साथ–साथ आथि ´क, राजनैतिक, सामाजिक, श`क्षिक सामाजिक, श`क्षिक ढ़ाँच` धार्मिक विचारधाराआ` स` सिंचित थ`।

यह विचारा ं का आदान प्रदान उस समय तक चलता रहता ह ै जब तक कि शिक्षक जा ं ज्ञान विद्यार्थिया ं तक पह ँ ुचाना चाहता है वह उनके द्वारा ग्रहण न कर लिया जाय ं। अथा र्त स ंचार की प्रक्रिया शिक्षक आ ैर शिक्षाथी र् दा ंनों का ं शामिल करती ह ै। जन संचार मीडिया ज ैसे प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट ्रोनिक मीडिया और नये य ुग के डिजीटल मीडिया का लोगा ं के जीवन पर गहरा प्रभाव ह ै। वे समकालीन समाज में संदेश प ्रसारित करने, विषय वस्त ु का निर्माण करने, सूचनाएं साझा करने, ज्ञान और सम्प्रेषण प ्राप्त करने का एक साधन है। घातीय गति से हो रही सामाजिक आ ैर तकनीकी प्रगति के कारण जन संचार मीडिया के विभिन्न रूप और नये य ुग का डिजीटल मीडिया समाज का एक अविभाज्य भाग बनता जा रहा ह ै। पहले जनसंचार मीडिया का उपयोग वर्ण नात्मक और व्यक्तिगत उपयोग के रूप में किया जाता था क्योंकि शैक्षिक विकास में मीडिया के उपयोग का कोई र् सुसंगत विचार नहीं था। हाला ंकि, प ्रौद्या ंगिकी के आगमन आ ैर विकास के साथ, सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग और विभिन्न डिजीटल मीडिया प्लेट ुफार्म आ जाने से, विद्वान मीडिया और शिक्षा के विषय की खोज में रुचि रखने लगे हैं। जन संचार मीडिया और डिजीटल मीडिया किसी विशेष कार्य का ं करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग करने की बजाए एक ही डिजीटल उपकरण के माध्यम से सूचना को संप्र ंषित आ ैर प्रसारित करने के आसान तरीके ह ैं।

1.3 मीडिया के प ्रभाव और शक्ति

मीडिया के प ्रभाव और शक्ति को कम करके नहीं आंका जा सकता। जन संचार मीडिया अब नया नहीं ह ै लेकिन नये युग का डिजीटल मीडिया इस क्षेत्र में एक नय ं खिलाड़ी के रूप में खड़ा है आ ैर इसका उपयोग द ंश म ं शिक्षा क्षेत्र में रूपान्तरित कर सकता है। मीडिया और डिजीटल मीडिया में लाखों और अरबों लोगों तक जल्दी पहुंचन ं और निर्बाध सूचना फ ैलाने की शक्ति है। इस प्रकार, यह द ुनिया में एक महत्वपूर्ण समाजीकरण आ ैर सामाजिक परिवर्तन का एजेंट बन रहा है। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था अधिगम का एक अच्छा तरीका है, हाला ंकि, वैश्वीकरण न ं ज्ञान प ्राप्त करने, सीखने और कम करने के तरीके का ं बदल दिया है। जनसंचार मीडिया आ ैर डिजीटल मीडिया का हमारे दैनिक जीवन पर प ्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण र् प ्रभाव पड़ता ह ै। यह अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा ह ै और इसका उपयोग शिक्षा का ं प्रोत्साहन द ंने के लिए किया जा सकता है। व ं अधिगम की नई प्रक्रियाओं आ ैर तकनीकों के माध्यम से नई तर ंगे उत्पन्न कर रहे हैं। जिसमें शिक्षार्थी की भी प ्रमुख भूमिका होती ह ै। शिक्षा क्षेत्र विकसित हो रहा ह ै जिससे ला ंगा ं का ं शिक्षित करने आ ैर स्वयं का ं शिक्षित करने के लिए भिन्न–भिन्न उपकरणों आ ैर प्लेटफार्मो ं का उपयोग किया जाता है। जन संचार मीडिया, डिजीटल मीडिया और नये य ुग की सूचनात्मक डिजीटल प्लेटफार्म की प ्रक्रिया भौतिक स्थान और समय के अवरा ंध के बिना कहीं भी सूचना और सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। नये मीडिया आ ैर प्लेटफार्मो ं के उपयोग ने विश ंष रूप से सामाजिक न ंटवर्किंग आ ैर संगठनात्मक सम्प्रेषण के क्षेत्र में उत्पादक और रचनात्मक अधिगम के लिए नये मार्ग खोले है। लेकिन यह अभी भी शिक्षण आ ैर अधिगम के उद्देश्यों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जगह बनाने की का ंशिश कर रहा है।

कार्ल बर्नस्टीन के अनुसार *"लोकप्रियता की संस्कृति यानी पॉपुलर–कल्चर का निम्नतम स्वरूप है– सूचना का अभाव, गलत सूचना, विकृति सूचना और लोक–जीवन के सत्य या वास्तविकता की अवहेलना, जिसने वास्तविक पत्रकारिता को लील लिया है"।*

जनसंचार का अर्थ है सूचना और विचारों का प्रसार व संचार के आधुनिक साधनों के जरिए मनोरंजन प्रदान करना । जनसंचार के इन माध्यमों में इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनों

ही आते हैं । सूचना आैर संचार का` मीडिया की नई तकनीक ने पूरी तरह से एक दूसरे में समाहित कर दिया ह"। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में मीडिया के दा` क्ष`त्र ऐस` थ` जिन्हा`ंने भ ूमंडलीय स्तर पर अपना विस्तार किया था। एक रेडियो प्रसारण आ"र दूसरा सिनेमा। लेकिन आज संचार का का`ई क्ष`त्र ऐसा नही ं ह" जिसका विस्तार भ ूमंडलीय स्तर पर न हा` रहा हो। इसका` संभव बनाया ह" उपग्रह संचार प्रणाली ने। उपग्रह संचार प्रणाली ने ही केबल टीवी के लिए मार्ग प्रशस्त किया। सूचना आ"र संचार क` क्ष`त्र में जा` नयी खा`जें ह ुई ह"ं आ"र जिस नयी डिजिटल टेक्ना`लॉजी का विस्तार ह ुआ ह", उसे सही परिप्रेक्ष्य म`ं समझना जरूरी ह" (आलम, 2012)। वर्तमान शैक्षिक समाज के लिए स ूचना प्रा"द्या`गिकी व सम्प्रेषण तकनीकी का सम्प्रत्यय परिचय का मा `हताज नही ं ह "। इसकी महत्ता सम्पूर्ण शिक्षातन्त्र पर सर्वत्र दृष्टिगा`चर हा`ती ह"। आज ज्ञान की संरचना वैश्विक रूप धारण कर चुकी ह"।

1.4 शिक्षा के प्रभावी कारक के रूप में जनसंचार साधन

प्रभावशाली शिक्षा एवं शिक्षण के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है। सामान्यतः शैक्षिक सम्प्रेषण के भौतिक साधनों को जनसंचार कहा जाता हैय जैसे–पुस्तकें, छपी हुई सामग्री, कम्प्यूटर, स्लाइड, टेप, फिल्म एवं रेडियो आदि । जनसंचार साधनों के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है तथा नवीन ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाता है। जब सम्प्रेषण व्यक्तियों में आमने–सामने होता है तो हम इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं तथा सम्प्रेषणकर्ता को तुरन्त पृष्ठपोषण मिल जाता है। दृश्य–श्रव्य शिक्षण साधन व्यक्ति के सम्प्रेषण का आधार हैं।

1.5 शिक्षा के क्ष`त्र में सहायक सामग्री

ये दृश्य–श्रृव्य प्रभावी उपकरण हैं जा` अधिगम की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं आ"र निरूपण के माध्यम से अधिगम की प्रक्रिया में योगदान द`कर मन का` अपील करत` हैं। उन्हें बहु–संव`दी सामग्री भी कहा जाता है क्योंकि कि व` पूरक उपकरण है जिनके द्वारा शिक्षक, एक से अधिक संव`दी नेटवर्क के अन ुप ्रयोग के माध्यम से अवधारणाओं आ"र व्याख्याओं को स्पष्ट करने, स्थापित करने और उन्ह` सह–संबंधित करने में सक्षम होते हैं। व` र ंग, चाल या रिकार्ड किये गये संदेशों या यहां तक कि ए`सी सामग्री क` उपयोग के माध्यम से छात्र को प ्रोत्साहित करते हैं जा` शिक्षार्थी की इच्छा और रुचि का` आकषि"त करता है (नाइजी, 2016)। षिवम् श्रीवास्तव 2022 ने पाया कि कि डिजिटल माध्यम से शिक्षा, मात ृभाषा में शिक्षा, एकल संस्थानों में बहु शिक्षा इत्यादि क ुछ ऐसे प्रस्ताव वर्तमान शिक्षा नीति में हैं जिसके लिए वित्त की आवश्यकता है। अतः वर्तमान परीक्षा नीति में शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च बनाए रखन` हेतु बेहतर निवेश पर जोर डाला गया है। वत"मान में शिक्षा पर सार्वजनिक खर्च जीडीपी का मात्र 4.43ः के आसपास है जिसको जीडीपी 6ः तक करने का सुझाव इस शिक्षा नीति में किया गया है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4 शैक्षिक प्रौद्योगिकी के तेजी से बदलते क्षेत्र में प्रासंगिक बने रहने के लिए, एनईटीएफ शैक्षिक प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तकों और चिकित्सकों सहित कई स्रोतों से प्रामाणिक डेटा की नियमित आवक बनाए रखेगा और डेटा का विश्लेषण करने के लिए शोधकर्ताओं के विविध सेट के साथ संलग्न होगा। ज्ञान और अभ्यास के एक जीवंत शरीर के विकास का समर्थन करने के लिए, एनईटीएफ कई क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि का आयोजन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी शोधकर्ताओं, उद्यमियों और चिकित्सकों से समाधान के लिए आयोजित करेगा।डवइपसम ब्वउमे जव प्दकपं 2020 इस शोध पत्र में मोबाइल इंटरनेट के द्वारा शिक्षा की सं भावनाओ का अधययन किया गया है।

अध्ययन के अनसार वर्तमान में मोबाइल फोन के द्वारा इंटरनेट से कंनेक्ट होकर अध्ययन की तमाम जरूरतों को परा किया जा रहा है। विद्यार्थियों के लिए मोबाइल समाज से जड़ु रहने और सीखन के लिए एक पर्याप्त माध्यम के तौर पर उभर कर सामने आ रहा है बेट्स एवं जी पूल 2019 अपने अध्ययन में पाया कि संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस् तेमाल किया जाता है जो इलेक् ट्रॉनिक माध् यम से सूचना के पारेषण , संग्रहण , निर्माण , प्रदर्शन या आदान – प्रदान में काम आते हैं। कक्षाओं म ं द ृश्य–श्रव्य सहायक साधनों का उपयोग, संरचित शिक्षण की उपलब्धि में मदद करता है। द ृश्य–श्रव्य सहायक साधनों के य लाभ हैं:

- यह विधि पारंपरिक एक तरफा सम्प्रेषण से बचने में मदद करेगी जा इसकी विशेषता है आ ैर इसे जटिल प्रत्यक्ष अन्तवैयक्ति संप्र षण के रूप में उचित रूप से उपयोग किया जा सकता है।
- यह शिक्षार्थियों को यथार्थवादी अन ुभव प्रदान करन में मदद करता है जो ध्यान लगाने आ ैर एकाग्रता क निर्माण में मदद करता है। साथ ही साथ घटना को समझने में मदद करता है।
- यह सा च और समझ को उद्दीप्त करने में सहायक है।
- श्रव्य–दृश्य सहायक साधन कक्षा के उद्द श्यों का बढ़ाते हैं और छात्रों की विषय के बारे में जानकारी का प ्रक्रिया का आगे बढ़ाने के अतिरिक्त तरीके प्रदान करते हैं।
- वे शिक्षक द्वारा प्रस्त ुत किये गये ज्ञान का मूर्त्त रूप देत हैं आ ैर अधिगम क
- अन ुभव को ऊजा वान बनान में मदद करते हैं। प्रभावी महत्वपूण पाठ योजनाएं आ ैर गतिविधियाँ बनान के लिए शिक्षक विभिन्न वीडियो का उपयोग करते हैं। यह एक कठिन कार्य है लेकिन उन्हें दृश्य–श्रव्य सहायक साधनों का अधिक प्रभावी बनाने क लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए जा इस प ्रकार हैं:

- **इलेक्ट्रोनिक मीडिया**

वीडियो र डियो ट लीविजन जैसे इलेक्ट्रोनिक मीडिया का भी ला गों का शिक्षित करन म गहरा प्रभाव पड़ता ह ै। ये माध्यम इतन प्रभावी होत है कि लोग बिना किसी जांच या सत्यापन के मीडिया की बातों का सुनते हैं।

- **वीडियो पाठ योजना**

वीडियो पाठ योजना के लोकप्रिय स्रा त बन रहे ह ैं, वे सूचना के महत्वपूण स्रोत हैं क्योंकि सच्चे जीवन की सूचना' जैसे वीडियो होना आवश्यक है क्योंकि यह कक्षा का प्र रित करता है और इसे और अधिक रोचक बनाता ह ै

- **मुद ्रित मीडिया**

मुद ्रित पाठ्य पुस्तकें, लेख और कक्षा के 'हैंड–आउटस' में इ ंटरनेट से जुड़ी स्क्रीन, द ृश्य–श्रव्य सामग्री आ ैर गेम जैसी चमक नहीं होती है, जो शैक्षिक अध्यापन पर डिजीटल मीडिया के प्रभाव का सुझाव देती है। लेकिन तीव्र और क ुशल सूचना के लिए नि ंरतर आ ैर लंबे समय तक कड़ी मेहनत के कारण समाचार पत्रों सहित पि ्रन्ट मीडिया की स्थापना ह ुई। आज भी 2.3 बिलियन लोग नियमित रूप से प्रिन्ट म अखबार पढ़ते ह ैं जा इंटरनेट का उपयोग करन वाले या टेलीफोन आ ैर लैपटाप पर सामग्री तक पहुंच की क्षमता रखने वाले लोगों की संख्या से अधिक है।

- **म ैस ेज–** मोबाइल क माध्यम से या कम्प्य ूटर क माध्यम से ,म ैसेजि ंग एप क माध्यम से सैकड़ों लोगों को सेकड़ा म जरूरी म ैसेज भेज सकते

है ं। इसक ` विभिन्न रूप और ऐप डेवलप हो गए हैं।

- **वेबसाइट–** वेब साइट एक पेज संग्रह हैं। जो सबक ` लिए सार्वजनिक है। यह एक डोमने नाम म ं रखते है। हर बेबसाइट क ` लिए एक इंटरनेट आधारित पता होता है। वेबसाइट विभिन्न विषय स ंबंध एव ं उद्द ेश्यों की पूर्ति हेतु बनाई जाती ह ै। यह व्यक्तिगत, सरकारी, निजी, संस्था, संगठन की हो सकती है। इंटरनेट क ` माध्यम स ` हम किसी भी संस्था, व्यक्ति, सरकारी व्यवसायिक–संगठन की सूचना प्राप्त कर सकत ` हैं।

1.7 निष्कष

आने वाले वक्त में जनसंपर्क के लिए सूचनाओं के संप्रेषण से ज्यादा जरूरी यह मुद्दा होगा कि उन संप्रेषित सूचनाओं की विश्वसनीयता कैसे बनी रहे। अभी यह होता है कि जनसंपर्क में सूचनाओं का प्रसारण (broadcast) किया जाता है, परंतु आगे चलकर सूचनाएं किसी खास विषयों के विशेषीकृत लक्ष्य के लिए संप्रेषित (narrowcasting) की जाएंगी। गोया कि युवाओं, वृद्धों, नौकरीपेशा, व्यापारी, विद्यार्थियों वगैरह–वगैरह अलग वर्गों को ध्यान में रखकर अलग–अलग विशेषीकृत जनसंपर्क की व्यवस्था की जाएगी।

1.8 सुझाव

वर्तमान तकनीकी प्रायोगिक युग में शिक्षका ` का ` कम्प्यूटर व इंटरन ` ट तकनीकी की सामान्य जानकारी के साथ–साथ विशिष्ट जानकारी भी हा ` ना नितान्त आवश्यक ह ै विभिन्न विभागों के क्रियाकलापों तथा गतिविधियों को इंटरनेट की सहायता से डाउनलोड करके या फिर यदि संभव हो तो वहाँ के जवाबदेह कार्मिकों से ऑडियो–वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करके वर्चुअल भ्रमण किया जा रहा है। ह

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] सेहट्टा एवं अन्य, भारतीय पत्रकारिता कोश, खण्ड दो,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली। 2015 पृष्ठ–487

[2] मुल्लर ज्ञानः समाचारों के बारे में सीखने पर ट्विटर और फेसबुक के उपयोग का प्रभाव।

[3] सूचना प्रौद्योगिकी और राजनीति जर्नल, 16(1), 36–51।

[4] दूबे,श्यामचरण (2018) समय और संस्कृति, नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन

[5] षहिन्दी समाचार पत्रों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रस्तुति का अध्ययन – ॅपापइववोष ीपू.पापइववो.वतह. अभिगमन तिथि 2018–10–14

[6] बेट्स एवं जी पूल 2019 प्रा.लि., (द.एशिया में पियर्सन एजुक ेशन के लाइसेंसी)।

[7] हरगिटाई, ई।, पाइपर, ए.एम., और मॉरिस, एम.आर. (2019)। इंटरनेट एक्सेस से इंटरनेट कौशल तकः वृद्ध वयस्कों में डिजिटल असमानता। सूचना सोसाइटी में यूनिवर्सल एक्सेस, 18(4), 881–890।

[8] बोक्स शोध म ंथन, (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X Vol. X, No.II pp (442-451) April - June 2019

[9] डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह सोशल मीडिया का वर्तमान परिदृश्य : उपयोगिता एवं प्रभाव ;एक अनुशीलनद्ध षोधसंचयन [17] भाग 10ए अंक 2, 15 जुलाई, 2019

[10] बाउलियन, एस., और थियोचारिस, वाई. (2020)। युवा लोग, डिजिटल मीडिया और जुड़ावः अनुसंधान का एक मेटा–विश्लेषण।

सोशल साइंस कंप्यूटर रिव्यू, 38(2), 111–127।

[11] श्रीवास्तव (2020) उच्चतर शिक्षा क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित नई नीति 2020

[12] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4

[13] राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार